एकः सूते सकलम्

मूल्य : एक प्रति 0.50 रु.
वार्षिक 5.00 रु.

नेशनल बुक ट्रस्ट साक्षरता संवाद

उत्तर - साक्षरताकर्मियों के लिए

सितंबर, 2008 वर्ष 13, अंक 9

मेले की माया

हरिसुमन बिष्ट

गांव का नाम है हाट। यहां जसवन्त सिंह नाम के व्यक्ति के दो बच्चे हैं। बेटे का नाम है मोहन और बेटी का नाम माया। गांव के हाईस्कूल में मोहन दसवीं कक्षा में और माया आठवीं कक्षा में पढ़ती थी। माया पढ़ने में अच्छी थी। एक समय जसवन्त सिंह अचानक बीमार पड़ गए। रुपयों के अभाव में उनका इलाज नहीं हो सका। वे इस दुनिया से चल बसे।

उनकी पत्नी और बच्चे अनाथ हो गए। पिता की मृत्यु के बाद एक दिन मोहन ने मां से कहा, 'मां खेतों में फसल होती नहीं। हम दोनों की आगे की पढ़ाई का खर्च कैसे चलेगा?'

'मैं भी यही सोचती रहती हूं बेटा! तुम्हारे पिता जीवित होते, तो मेहनत मजदूरी कर लेते। मेरा स्वास्थ्य ठीक रहता तो कुछ कमा लेती!'

मोहन सोच में पड़ गया। मां और बहन के लिए खाना जुटाना कठिन हो गया। वह पैसे कमाने की मंशा से दिल्ली चला गया। चांदनी चौक की एक दुकान में उसे काम मिल गया। बहुत खुश हुआ। लाला गेंदामल को भी ऐसे ही मेहनती और होनहार कर्मचारी की जरूरत थी। दो हजार रुपये की पगार पर उसने काम मंजूर कर लिया। खा-पीकर जो कुछ बचता, अपनी मां को भेज देता।

घर का खर्च चलने लगा, पर मां को माया की चिंता सताने लगी। गांव की बेटियों के विवाह हो रहे थे। माया के लिए भी अच्छे-अच्छे घरों से रिश्ते आ रहे थे। माया की कमजोर काया देखकर कहीं बात बन नहीं रही थी।

मां ने मोहन को पत्र लिखा।

मोहन को भी बहन की चिंता हुई। वह गांव आया, इलाज के लिए माया को दिल्ली ले गया। वहां उसने लाला गेंदामल को सारी बात बताई, गेंदामल ने उसकी बात पर गंभीरता से सोचा। वे मोहन को समझाने लगे, 'मेरी बात मानो तो अपनी बहन को हेल्थ मेले में जांच के लिए ले जाओ।'

'वह मेला कहां लगता है।' सहज भाव से मोहन ने पूछा।

'हेल्थ मेला दिल्ली के अलग-अलग इलाकों में लगता है। महिलाओं को इलाज करवाने में यहां बड़ी सुविधा हो रही है। हर रविवार को मेले में अनुभवी डॉक्टर आते हैं। उस दिन तुम्हें भी छुट्टी रहती है।'

मोहन ने हेल्थ मेले की अधिक जानकारी ली, उसे पता लगा कि हेल्थ मेले को 'स्त्री कैंप' भी कहते हैं।

अगला आयोजन अशोक नगर में होना था। जो उसके निवास से अधिक दूर नहीं था।

मोहन बहन को साथ लेकर मेले में गया। पूछताछ केंद्र पर तैनात महिला से उसने पूछा। महिला ने उसे बताया कि 'यह मेला महिलाओं के स्वास्थ्य की जांच के लिए ही है। रजिस्ट्रेशन करवाने के बाद माया डॉक्टर के पास गई। डॉक्टर ने उसके स्वास्थ्य के संबंध में पूछा, उसके खान-पान के बारे में जाना।

माया बताती गई, डॉक्टर उसे रजिस्ट्रेशन कार्ड पर लिखता गया। सारी बातें मालूम कर लेने के बाद डॉक्टर ने

माया के शरीर पर 'आला' लगाया। लंबी-लंबी सांस लेने व सांस रोककर धीरे-धीरे छोड़ने को कहा। आंखें देखीं। गला देखा। जीभ और नाखून का रंग देखा, फिर उसे दो शीशियां थमा दीं। एक शीशी में पेशाब और दूसरी शीशी में खून के नमूने देने को कहा। माया परेशानी में पड़ गई। मेले में पेशाब कैसे दे, खून की जांच के लिए बना काउंटर उसने देख लिया था।

माया की परेशानी डॉक्टर समझ गया। उसने कहा, 'घबराने की कोई बात नहीं है। मेले में शौचालय की भी व्यवस्था है।'

माया ने राहत की सांस ली। जांच के लिए खून देकर वह शौचालय गई, पेशाब का नमूना शीशी में लेकर नर्स को दे आई। रिपोर्ट मिलने तक माया सामने की कुर्सी पर बैठ गई। थोड़ी देर बाद एक डॉक्टर आया। वह कुर्सियों पर बैठी महिलाओं को बताने लगा कि 'यह मेला सरकार द्वारा चलाया जा रहा है। इसका उद्देश्य महिलाओं के स्वास्थ्य की देख-रेख करना है। महिलाओं का स्वास्थ्य ठीक रहेगा तो घर परिवार के काम ठीक से चलेंगे, घर में किसी तरह का तनाव नहीं होगा। स्वस्थ बच्चे पैदा होंगे। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। दवाइयों और इलाज पर फिजूल का खर्च नहीं होगा। उन रुपयों से घर का रहन-सहन और बच्चों की पढ़ाई होगी।'

माया को डॉक्टर की बातें अच्छी लगीं। इस बीच उसे नर्स ने आकर बताया, खून और पेशाब की जांच रिपोर्ट आ चुकी है। वह कुर्सी से उठी, डॉक्टर के पास चली आई। डॉक्टर ने उसकी रिपोर्ट देखकर बताया, 'वह शारीरिक रूप से बहुत कमजोर है। एनेमिक है। उसके खून में हिमोग्लोबिन औसत से बहुत कम है। अपने खान-पान पर ध्यान न दिया तो उसे गंभीर बीमारी हो सकती है।'

डॉक्टर ने कार्ड पर लिखा और बताया, उसके भूख खुलने की दवा के साथ-साथ ताकत के लिए कुछ विटामिन लिख दिए हैं। दवाइयां सुबह-शाम लेनी हैं। सामने के काउंटर से मुफ्त दवाइयां लेने का इशारा किया।

'डॉक्टर साहब, इसे क्या बीमारी है।' मोहन ने डॉक्टर से जानना चाहा। डॉक्टर ने उसे बताया, 'समय पर भोजन न करने से ऐसी कमजोरी आती है। इन दवाइयों से वह जल्दी ठीक हो जाएगी। उसे हरी सब्जियां, दाल, मौसमी फल, अंडे और सुबह-शाम दूध या दूध से बनी चीजें खिलाया करो।'

मोहन मन ही मन खुश हुआ। उसने उत्सुकता से पूछा, 'हरी सब्जियां, दाल, मौसमी फल, अंडे और दूध पीने से माया ठीक हो जाएगी डॉक्टर साहब!'

डॉक्टर ने उसे विश्वास दिलाते हुए बताया, 'साथ में इन दवाइयों को भी लेने से जल्दी ठीक हो जाएगी। कोई परेशानी बढ़े तो उसे जांच के लिए बड़े अस्पताल में भेजें। इसके लिए अगले इतवार को इसी मेले में जांच के लिए आना होगा।' मोहन के हाथ धन्यवाद के लिए जुड़ गए।

डॉक्टर का व्यवहार देखकर माया से मोहन ने पूछा, 'बहन, तुझे डॉक्टर साहब कैसे लगे।'

'अच्छे हैं। बहुत अच्छे।' माया के चेहरे पर मुस्कुराहट देखकर मोहन को विश्वास हो गया, माया मन की बात कह रही है। डॉक्टर ने उसकी बीमारी पकड़ ली है। उसने माया से पूछा, 'मैदान में मेला लगा है। इसे देखोगी बहन?'

माया खिलखिला पड़ी, 'भैया एक बात कहूं—मैं सुबह सोच रही थी, तुम मुझे मेले में ले जाओगे या फिर डॉक्टर के पास। मेला तो मेला है। गांव का हो या शहर का। मगर यहां तो।'

'बहन मेले तो होते ही हैं मेल-मिलाप और मनोरंजन के लिए। मनोरंजन तभी हो सकता है, जब स्वास्थ्य ठीक रहेगा।'

माया के मन में मेले में घूमने की उत्सुकता बढ़ गई। उसने देखा, बच्चे और महिलाओं की संख्या बढ़ती जा रही है। रक्तचाप, मधुमेह, खून की जांच, पेशाब की जांच के लिए अलग-अलग काउंटर बने हैं।

'भैया! अगले स्टॉल की तरफ भी जा रहे हैं, लोग। वहां क्या है।'

'चलो, अगला स्टॉल भी देख लेते हैं। तुम्हें थकान तो नहीं होगी।'

'नहीं, नहीं भैया, मुझे बहुत अच्छा लग रहा है।'

माया के कदम आगे की ओर बढ़ने लगे। उसने दूर से

ही पूछा, ‘यहां क्या हो रहा है भैया!’

‘यहां महिलाओं में जागरूकता लाने की बात बताई जा रही है।’

‘हमारे हाट में भी ऐसे अभियान चलते हैं। पर वहां तो इस तरह का आयोजन कभी नहीं होता। सुन रहे हो, वहां भी डॉक्टर कुछ बता रही हैं।’

‘हां, वहां मंच पर कई चार्ट लगे हैं, उनमें बताया गया है कि कितने साक्षरता केंद्र और सर्व शिक्षा अभियान चलाए जा रहे हैं। जिनमें ग्रामीण तथा झुग्गी झोपडियों में रहने वाली महिलाएं भागीदारी कर रही हैं।’

‘भैया! मेरा मन तो सचमुच यहीं बैठकर डॉक्टर की बातें सुनने को कर रहा है।’

‘एक बार ठीक हो जाओ, उसके बाद दिन भर बैठी रहना, इस समय तो वापस चलें।’

मोहन और माया घर लौट आए। हेल्थ मेले से मिली दवाइयों को माया गौर से देखती रही। मोहन ने उसके ध्यान को भंग करते हुए पूछा, ‘डॉक्टर का बताया याद है न?’

‘हां, मुझे सब कुछ याद है।’

‘भूली तो नहीं?’

‘हेल्थ मेले में मैं अकेली जा सकती हूं।’

‘ऐसी भूल न करना! इतवार के दिन मैं साथ चलूंगा।’

इतवार आया, माया अकेली मेले में जाने लगी। मोहन की नजर पड़ी, वह बोला, ‘कहां जा रही हो माया! तुम्हारी तबीयत तो ठीक है।’

‘मैं मेले में जा रही हूं। आज डॉक्टर से जांच करवानी है।’

‘यह तो मुझे भी मालूम है। किंतु अकेली!’

‘तुमने तो दिखा ही दिया था! हिम्मत करके देखती हूं।’

माया को वहां पहुंचने में कोई परेशानी नहीं हुई।

काउंटर पर कार्ड में तारीख दर्ज करवाई। डॉक्टर की टेबल पर पहुंची। वहां कार्ड देखकर दवाइयां, दूध, हरी सब्जियां, मौसमी फल नियमित होने की बात पूछी जा रही थी, जांच के बाद उसे पंद्रह दिन की दवा लिख दी।

माया खुश हुई। डॉक्टर के पास अधिक समय नहीं लगा। वह प्रसन्न होकर महिलाओं के बीच बैठ गई। सभी महिलाएं डॉक्टर के बोलने की प्रतीक्षा कर रही थीं।

माया को अधिक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी।

डॉक्टर आई। उसने माइक से बोलना शुरू किया, ‘हम लोग देखते हैं हमारे समाज में लड़कियों के साथ खान-पान में भेदभाव किया जाता है। जिससे लड़कियां कुपोषण की शिकार होती हैं। उन्हें साधारण रोटी और लड़कों को पौष्टिक आहार दिया जाता है। उस कुपोषण का प्रभाव कई तरह से देखने में आता है। उम्र आने पर लड़कियों को मासिक धर्म होना स्वाभाविक है। यह प्रकृति का नियम है। इसे शारीरिक विकास चक्र भी कह सकते हैं। समाज में इसे बहुत गलत ढंग से देखा जाता है। सबसे बड़ी कमी यह है कि किसी भी लड़की को इसके संबंध में कोई जानकारी नहीं होती। जब पहली बार मासिक धर्म होता है—वह रो पड़ती है—घबराती है—उसे समझ नहीं आता कि ऐसे में उसे क्या करना है। वह अपनी सहेली से मन की बात करती है या फिर भाभी से, इस उम्र तक उसे इस बारे में कोई नहीं बताता—रक्त स्राव के समय उसे अपनी सुरक्षा के लिए क्या-क्या करना चाहिए। शरीर की सफाई ठीक से करनी चाहिए, मासिक धर्म के समय सहवास से दूर रहना चाहिए। जानकारी के अभाव में संक्रामक रोग पैदा हो सकते हैं। जिन्हें योनि जनित रोग कहते हैं।

फिर यह भी है कि अक्सर लोग लड़कियों की शादी कच्ची उम्र में कर देते हैं। कच्ची उम्र में उनको गर्भधारण करना पड़ता है। विवाहित लड़की मां बनना तो चाहती है, परंतु कच्ची उम्र में गर्भधारण करने से उसके शरीर पर क्या प्रभाव पड़ेगा—वह नहीं सोचती। कच्ची उम्र में गर्भधारण करने से शरीर में खून की कमी हो जाती है। जिस कारण अनेक बीमारियां होनी शुरू हो जाती हैं। इससे न तो वह खुद कभी स्वस्थ रह पाती है, न शिशु को ही स्वस्थ जीवन दे पाती है। ऐसे समय में गर्भ में पल रहे बच्चे को स्वस्थ रखने के उपायों की जानकारी डॉक्टर से अवश्य लेनी चाहिए।

नवजात शिशु को समय पर टीका दिलाया जाना चाहिए। बी.सी.जी., खसरा आदि के टीके लगवाने और पोलियों की खुराक पिलाने से भयंकर बीमारियों से बच्चे को

बचाने में मदद मिलती है। कुछ लोग अधिक बच्चे पैदा करने को भगवान की देन मानते हैं। ऐसा सोचना अच्छी बात नहीं है। बच्चों की अच्छी परवरिश माता-पिता की जिम्मेदारी होती है।

माया ने बहुत कुछ सीखना चाहा। मेले में साक्षरता का मंच था। वहां लोग बता रहे थे—मां का शिक्षित होना जरूरी है। बच्चों की पहली शिक्षा घर में ही मिलती है। पहली शिक्षिका मां ही होती है। मां शिक्षित हो तो बच्चे भी अच्छी शिक्षा ग्रहण करते हैं।

माया के कदम आगे बढ़े। उसकी नजर मोहन पर पड़ी, वह चौंककर बोली, 'भैया! तुम कब आए यहां?'

'मैंने सोचा तुम गांव से आई हो, रास्ता भटक जाओगी, इसलिए तुम्हारे पीछे-पीछे ही चला आया।'

'मैं रास्ता ढूंढ़ लूंगी भैया!'

'अब वापस चलें।' मोहन ने पूछा।

'व्यवहारिक शिक्षा केंद्र भी देखना है भैया!'

'वहां क्या है माया?'

'यह तो मुझे भी नहीं मालूम,' माया ने कहा।

आगे बहुत बड़ा हॉल था। खिलौने, बैग, बेड शीट, बेड कवर, कुसिन, वाल हैंगिंग, कालीन, शो पीस, चूढ़ियां, मोमबत्तियां वहां रखे हुए थे, करीने से रखी चीजें उसे अच्छी लगीं। माया ने एक चूड़ी उठाई। उसे हाथ में डालने लगी। काउंटर पर खड़ी महिला ने उसे बताया—ये सारी चीजें आर्थिक रूप से कमजोर महिलाओं ने बनाई हैं। इन्हें बिक्री के लिए रखा गया है। दूर-दूर से आए लोग इन्हें खरीदते हैं।

माया को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। उसे खुश देखकर मोहन ने पूछा, 'डॉक्टर ने फिर कब बुलाया है।'

'पंद्रह दिन बाद। मगर मैं यहां हर इतवार को आया करूंगी।'

'क्यों?'

'यूं ही, यहां आना अच्छा लगता है।'

दिन-दिन माया स्वस्थ होने लगी। गांव लौटी। अब मां उसे पहले से अधिक कमजोर लगी। गांव की महिलाएं और बच्चे उसे सब कमजोर और बीमार दिखते, गांव की सहेलियों और महिलाओं ने उसके स्वास्थ्य के विषय में पूछा। उसने सभी को हेल्थ मेले की कहानी सुनाई। सहेलियों और गांव की महिलाओं को उसकी बातों पर विश्वास नहीं हुआ—वे सब उससे पूछतीं, 'माया, तुमने सच में अस्पताल में इलाज नहीं करवाया।'

'रोज दूध पीने, दूध में बनी चीजें, हरी सब्जी, दाल, अंडे खाने से दवाइयों की जरूरत ही कम पड़ी।'

'तब तो हमें भी ऐसा ही करना चाहिए।'

'हां, हां ऐसा करोगी तो स्वस्थ रहोगी।'

एक दिन माया ने खुश होकर मोहन को पत्र लिखा—भैया, हेल्थ मेले की बातें मैंने गांव की महिलाओं को बताईं, वे सब कहती हैं कि उन्हें भी अपने स्वास्थ्य की जांच करवानी है, दिल्ली शहर के डॉक्टर हाट नहीं आ सकते। हाट की ये महिलाएं दिल्ली तो नहीं जा सकतीं। मैं सोचती हूं एक न एक दिन 'हेल्थ मेला' यहां भी लगाऊंगी। तब तक स्वास्थ्य के संबंध में जितना मैंने सीखा है, इन्हें बता रही हूं। व्यावसायिक शिक्षा के विषय में सोचती हूं—आंवला, अदरख, लहसुन का अचार आदि बनाना शुरू करवाऊं। ये चीजें तो गांव में बहुत होती हैं, अगली फसल पर कच्चे आम व्यापारी को नहीं बेचने दूंगी। उनसे आचार, चटनी, मुरब्बा और आम पन्ना बनाकर बाजार में बेचने को कहूंगी। यहां काम करने को कुछ है नहीं। खाली बैठी रहने की बजाए कुछ रुपये कमा लेंगी। यहां मेरी सभी सहेलियां और महिलाएं खुश दिखने लगी हैं, वे सब मेरे साक्षरता केंद्र में आने लगी हैं। किसी-किसी ने व्यावसायिक शिक्षा से उत्साहित होकर आंवला तोड़कर उसे सुखाना शुरू कर दिया है। जल्दी ही वे इसे बाजार में बेच आएंगी। फिर उन्हें अच्छा खाना-पीना, लत्ता-कपड़ा और दवा-दारू के लिए किसी का मुंह नहीं ताकना पड़ेगा। वैसे भी अच्छा खाना-पीना मिलेगा तो उन्हें दवा दारू की जरूरत नहीं रहेगी। बस इतना ही—तुम्हारी प्यारी बहन...

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया द्वारा राज्य साक्षरता मिशन प्राधिकरण, छत्तीसगढ़ के सहयोग से कोरबा में आयोजित कार्यशाला में तैयार हुई कहानी

ट्रस्ट के नवीनतम प्रकाशन

फ्रीडा मेरी बेदी

मनोरमा दीवान

पृ. 24 रु. 10.00

ISBN 978-81-237-5310-2

यह कहानी एक ब्रिटिश महिला, वास्तविक पात्र के जीवन पर केंद्रित है, जो भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान सत्याग्रह करने व जेल जाने वाली पहली ब्रिटिश महिला थीं। इंग्लैंड के डरबीशायर शहर में जन्मी फ्रीडा मेरी होलस्टन ने क्रांतिकारी नौजवान प्यारेलाल बेदी से विवाह किया। भारत आते ही फ्रीडा मेरी बेदी ने भारतीय समाज के रीति-रिवाजों को गहराई से समझा व आत्मसात किया। यहां आकर उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। गिरफ्तारी के दौरान जेल में एक अंग्रेज अधिकारी ने उन्हें अनेक प्रकार के प्रलोभन व दंड का आतंक दिखाकर आंदोलन वापस लेने को कहा। पर भारतीय संस्कृति में रची बसी फ्रीडा मेरी बेदी एक भारतीय पत्नी की भांति अपने देश भारत की आजादी के लिए संघर्षरत रहीं। भारत की आजादी के उपरांत अपने अंतिम दिनों में उन्होंने बौद्ध धर्म अपना लिया और अंत तक बौद्ध बनकर भारत माता की सेवा में जुटी रहीं।

गीता सोहरिया के आकर्षक चित्रांकन ने कहानी में रोचकता और वास्तविकता भर दी है।

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
और उसकी गतिविधियों तथा प्रकाशनों के बारे में
विस्तृत जानकारी के लिए अवलोकन करें :
वेबसाइट : www.nbtindia.org.in

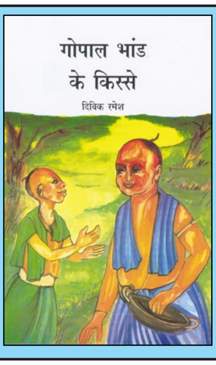

गोपाल भांड के किस्से

दिविक रमेश

पृ. 20 रु. 10.00

ISBN 978-81-237-5337-9

प्रस्तुत पुस्तक में रचनाकार ने दंतकथाओं के विख्यात नायक गोपाल भांड के दो लोकप्रिय किस्सों या घटनाओं को सरल एवं सुबोध भाषा में लिखा है। इस पुस्तक में 'बेचारा गप्पी' व 'छुड़ाना सांड का' संकलित किया गया है। गोपाल भांड बंगाल जनपद के विख्यात नायक थे।

पहली कहानी में गोपल भांड अपने ही गांव के एक गप्पी को अपनी सूझबूझ से निरुत्तर कर देता, गप्पी गोपाल भांड को रास्ते में रोक कर उनका मजाक बनाना चाहता। पर वह खुद ही मूर्ख बन जाता है।

दूसरी कहानी में गोपाल भांड अपने महाराज द्वारा उसकी मां के मृत्यूपरांत श्राद्ध हेतु छोड़े गए सांड को नवाब के सैनिक पकड़ कर ले जाते हैं। महाराज गोपाल भांड को सांड को छुड़ाने भेजता है, वह अपनी सूझबूझ के साथ सांड को छुड़ा कर इनाम की राशि जीत लेता है।

रुमा शर्मा के आकर्षक चित्रांकन से कहानी अच्छी और प्रभावी बन पड़ी है।

नवसाक्षरों के लिए पुस्तकें
हर विषय की पुस्तकें
अपनी भाषा में रोचक, ज्ञानवर्धक पुस्तकों का
सूची-पत्र मंगवाने के लिए आज ही निम्नलिखित पते पर संपर्क करें
प्रबंधक (विक्रय एवं विपणन)
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

पुस्तक मिली

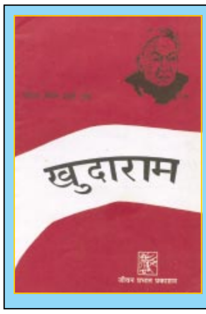

खुदाराम
पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र'
जीवन प्रभात प्रकाशन
मुंबई-400 056
पृ. 16 मूल्य : 15 रुपये

यह कहानी सांप्रदायिक विषय पर केंद्रित है। अनजाने में हुई भूल के कारण समाज के दबाव में आकर देवनंदन प्रसाद को धर्म परिवर्तन करना पड़ा। हिंदू से मुस्लिम, उल्फत अली बनना पड़ा। एक गरीब दुखिया औरत को अपने घर में चौका-बर्तन के काम के लिए रखने के कारण उसे मुसलमान बनना पड़ा। पति से झगड़ कर भागी हुई इस औरत ने स्वयं को अहीरन रुकमिनिया बताकर देवनंदन से काम मांगा। उन्होंने उसे काम पर रख लिया। दो महीने बाद उसका पति उसे ढूंढ़ते हुए वहां आ गया और उसका भेद खुल गया। देवनंदन जी के परिवार को तब पता चला कि वह स्त्री मुसलमान है। उसका नाम रुकमिनिया नहीं फिरौजी है। इस कारण हिंदू समाज ने देवनंदन को धर्म से बहिष्कृत कर दिया और उसे मुसलमान बनना पड़ा। सात वर्षों की लंबी अवधि के बाद देवनंदन प्रसाद का बेटा रघुनंदन, इनायत अली फिर से हिंदू धर्म में आने के लिए आर्य समाज की शरण में गया। उसके धर्म परिवर्तन को लेकर हिंदू-मुसलमान के झगड़े की स्थिति चरम पर पहुंच गई। ऐसी संकट की घड़ी में खुदाराम नामक व्यक्ति सहायक हुआ। वह उस गांव के दोनों समुदायों के लिए चमत्कारी फकीर था। वह दोनों समुदाय की महिलाओं, माताओं, बेटियों और बच्चों को एकत्र कर घटना स्थल की ओर गीत गाता हुआ चल पड़ा। हिंदू-मुस्लिम दोनों को एक ही ईश्वर की संतान बताते हुए वह गाता रहा :

तू है मेरा खुदा, मैं हूं तेरा खुदा
तू खुदा, मैं खुदा, फिर जुदाई कहां?

बच्चों और महिलाओं की ऐसी कोमल एवं करुण पुकार सुनकर दोनों समुदाय के लोगों का हृदय परिवर्तित हुआ। खुदाराम दोनों समुदायों में एकता एवं सद्‌भावना पैदा करने में सफल हुआ।

पाठकीय प्रतिक्रिया

- 'साक्षरता संवाद' के सभी अंक निरंतर प्राप्त हो रहे हैं। हर अंक अपनी नई साज-सज्जा, पठनीय सामग्री और रुचिकर जानकारी के साथ नए अंदाज और अनूठेपन के साथ उपस्थित होता है। सभी अंक नर-नारी, बाल-वृद्ध-युवा सभी के लिए उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं। देश के साक्षरता अभियान में निश्चय ही इस पत्रिका का सराहनीय योगदान है। अंधविश्वासों, कुरीतियों और रूढ़ियों की समाप्ति में भी पत्रिका की महत्वपूर्ण भूमिका है।

  अवधेश चंसौलिया, ग्वालियर (म.प्र.)

- 'साक्षरता संवाद' के अंक नियमित मिल रहे हैं। नवसाक्षरों के लिए यह पत्रिका पूर्णत शिक्षाप्रद है। जुलाई, 2008 के अंक की गद्य-रचनाएं रुचिपूर्ण हैं। कविता उत्साहवर्द्धक है।

  विनय अश्म, गिद्धौर, जमुई

- 'साक्षरता संवाद' लगभग तीन माह से नियमित मिल रहा है। पत्रिका अच्छी लगी। बाल पत्रिका व प्रौढ़-शिक्षा से संबंधित उन सभी साक्षर लोगों के लिए उपयोगी है। जुलाई, 2008 का अंक काफी अच्छा लगा, और इन सब में मुझे नवसाक्षरों के लिए 'बस्ते भीतर तीन किताबें' और भी प्यारी लगी।

  नेहा अनामिका, चंपारण (बिहार)

- 'साक्षरता संवाद' अंक 8 (वर्ष 13) मिला। गतिविधियों की जानकारी मिली। लक्ष्य समूह को सम्मुख रखते हुए माधुरी शास्त्री का गीत पसंद आया। नलिनी श्रीवास्तव ने मुंगिया दाई के माध्यम से 'सियान बिना ज्ञान नहीं' को बेहतर तरीके से चरितार्थ किया है। यह जान कर भी अच्छा लगा कि एन.बी.टी. का 51वां स्थापना दिवस समारोह नए कार्यालय परिसर में आयोजित हुआ।

  कासिम खुरशील, पाटना (बिहार)

पैसा बोलता है

नेहा अनामिका

पैसा...पैसा...पैसा...ऊफ ये पैसा, इसका जादू है कैसा,
पैसा है तो सभी पूछते,
पैसे की, खनक पे सभी झूमते
हर किसी को है इसकी भूख
इसमें ढूंढ़ते हैं सारे सुख।

पैसों से खरीदी जा सकती हैं तमाम चीजें,
बाजार के खिलौने हो या इंसानों के रिश्ते
पैसों की खनक बदल देती है अच्छे-अच्छों की नीयत
पैसों को देख रंगीन हो जाती है सबकी तबीयत,
हकीकत हो अफसाने या हो आंखों के सपने
पैसे जब खनकते हैं तो सब हो जाए अपने।

दिल की जो भी हो इच्छा अधूरी
पैसों से हो सकती है, पूरी
क्योंकि पैसा बोलता है,
किस्मत का ताला खोलता है।
पैसा है तो सब कुछ, भाई-बहन, यार, दोस्त,
पैसा नहीं तो कुछ भी नहीं।

पैसा ही यार है, पैसों से ही प्यार है
जो पैसा नहीं तो समझो बस,
तकरार ही तकरार है।
पैसों की गर्मी होती है सबसे तेज,
दो भाइयों में बढ़ाती है क्लेश।

ऐ मेरे ईश्वर! इस दुनिया को नहीं है अब तेरी जरूरत,
इस दुनिया में चल रही है बस पैसों की हुकूमत।
पैसा है तो ईश्वर भी है, ईश्वर के प्रति जो करते हैं भक्ति
वह भक्ति भी है स्वार्थी
इसमें कोई संदेह नहीं।

R. N.I. No. 65414/96
Postal Regd. No. DL (SW) 1/4078/06-08
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 22/2006-08
Mailing date 25/26

कहानी

रामलाल की समझदारी

यू. एस. आनन्द

एक गांव में रामलाल नाम का एक व्यक्ति रहता था। एक बार वह अपने एक मित्र से मिलने शहर गया। वह अपने जीवन में पहली बार गांव से शहर आया था। शहर की चकाचौंध देखकर उसकी आंखें चुंधिया गईं। बड़े-बड़े रंग-बिरंगे मकान देखकर वह ठगा-सा रह गया। तेज रफ्तार से दौड़ती कारों, ट्रामों से बचता हुआ वह सड़क के किनारे-किनारे चल रहा था।

एक जगह बहुत ही सुंदर मकान देखकर वह रुक गया, सिर की पगड़ी ठीक कर वह गौर से मकान को देखने लगा। मकान के सामने के बगीचे में तरह-तरह के फूल खिले हुए थे। बीच में रंगीन फव्वारा चल रहा था। वह बड़े गौर से मकान को देख रहा था कि तभी एक मनचला युवक उसके सामने आया और बड़े रौब से बोला, ''ए, तुम उधर क्या देख रहे हो?'' रामलाल अपने सामने साहबों जैसी पोशाक पहने आदमी को खड़ा देखकर घबरा गया। हकलाते हुए बोला, ''कु...कु...कुछ नहीं सरकार, मैं मकान के ऊपर बैठे कौओं को देख रहा था।'' वह मकान की छत पर बैठे कौओं की ओर इशारा करके बोला। रामलाल को भयभीत देखकर मनचला युवक तनिक और तेज आवाज में बोला, ''जानते हो, इस मकान के ऊपर बैठे कौओं को देखने के बाद पैसे देने पड़ते हैं। बोलो, कितने कौओं को देखा तुमने?'' बेचारा रामलाल यह सोचकर कि वह रंगे हाथों चोरी करते पकड़ा गया है, घिघियाते हुए बोला, ''बस, पांच कौए देखे हैं सरकार!'' —''तो चलो पांच रुपये निकालो...वर्ना अभी पुलिस के हवाले कर दूंगा।''

पुलिस का नाम सुनकर रामलाल का गला सूखने लगा। होठों पर जीभ फिराते हुए उसने जेब से पांच रुपये का नोट निकालकर उस युवक को दे दिया और 'जान बची लाखों पाए' के अंदाज में भाग खड़ा हुआ।

दिनभर कई जगह भटकने के बाद शाम को जब वह अपने मित्र से मिला तो कुशल-क्षेम के बाद वह बड़ी शान से मूंछों पर ताव देते हुए बोला, ''अरे भाई आज तो मैंने तुम्हारे शहर के एक आदमी को मूर्ख बना दिया।'' शहरी मित्र ने उसकी बात सुनकर हैरानी से पूछा, ''कैसे भला?''

रामलाल सुबह की घटना सुनाते हुए गर्व से बोला, ''असल में मैंने मकान की छत पर ग्यारह कौए देखे थे, किंतु पैसे मैंने सिर्फ पांच कौए के ही दिए...!'' रामलाल हो...हो...कर हंस पड़ा। शहरी मित्र रामलाल की समझदारी पर तरस खा कर रह गया।

पाठक मंच बुलेटिन

बच्चों की द्विभाषी पत्रिका

वार्षिक शुल्क : रु. 50.00

संपर्क करें :

संपादक, राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशन एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

'साक्षरता संवाद' के अंतिम दो पृष्ठ 7 और 8, नवसाक्षरों के लिए हैं। इसे अलग करके अन्य पठन सामग्री के साथ रखा जा सकता है।

संपादक : देवशंकर नवीन
संपादकीय सहयोग : कमलेश कुमारी
उत्पादन सहयोग : प्रवीण कुमार कपिल

एकः सूते सकलम्

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया की ओर से श्रीमती नुज़्हत हसन द्वारा एस.एस. इंटरप्राईजेस, प्रथम तल, 10/8020 मुलतानी ढांढ़ा, पहाड़गंज, नई दिल्ली-55 से टाईपसेट तथा अरावली प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, डब्ल्यू-30, ओखला फेज II, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित एवं ए-5 ग्रीन पार्क, नई दिल्ली-110016 से प्रकाशित।